दादा भगवान प्ररूपित
जगत कर्ता कौन ?

दादा भगवान प्ररूपित

जगत् कर्ता कौन?

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन

प्रकाशक : अजीत सी. पटेल
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाली सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009,
Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2100

प्रथम संस्करण : 3000, प्रतियाँ, मार्च, 2008
रीप्रिन्ट : 11000, प्रतियाँ, अप्रैल, 2009 से दिसम्बर, 2013
नयी रीप्रिन्ट : 1500, प्रतियाँ, अगस्त, 2017

भाव मूल्य : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : 20 रुपए

मुद्रक : अंबा मल्टीप्रिन्ट
B-99, इलेक्ट्रॉनिक्स GIDC,
क-6 रोड, सेक्टर-25,
गांधीनगर-382044.
Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2142

त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं

नमो सिद्धाणं

नमो आयरियाणं

नमो उवज्झायाणं

नमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंच नमुक्कारो

सव्व पावप्पणासणो

मंगलाणं च सव्वेसिं

पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ ३ ॥

जय सच्चिदानंद

'दादा भगवान' कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर 'दादा भगवान' पूर्ण रूप से प्रकट हुए और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। 'मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?' इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

'व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं', इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को 'दादा भगवान कौन?' का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ''यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो 'ए.एम.पटेल' हैं। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे 'दादा भगवान' हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और 'यहाँ' हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।''

निवेदन

आप्तवाणी मुख्य ग्रंथ है, जो दादा भगवान की श्रीमुख वाणी से, ओरिजिनल वाणी से बना है, वो ही ग्रंथ के छ: विभाजन किए गए हैं, ताकि वाचक को पढ़ने में सुविधा हो।

1. ज्ञानी पुरुष की पहचान

2. जगत् कर्ता कौन ?

3. कर्म का सिद्धांत

4. अंत:करण का स्वरूप

5. सर्व दु:खों से मुक्ति

6. आत्मबोध

परम पूज्य दादाश्री हिन्दी में बहुत कम बोलते थे, कभी हिन्दी भाषी लोग आ जाते थे, जो गुजराती नहीं समझ पाते थे, उनके लिए परम पूज्य दादाश्री हिन्दी बोल लेते थे, वो वाणी जो केसेटों में से ट्रान्स्क्राईब करके यह आप्तवाणी ग्रंथ बना है! वो ही आप्तवाणी ग्रंथ को फिर से संकलित करके यह छ: छोटे ग्रंथ बनाए हैं! उनकी हिन्दी 'प्योर' हिन्दी नहीं है, फिर भी सुनने वाले को उनका अंतर-आशय 'एक्ज़ेक्ट' समझ में आ जाता है। उनकी वाणी हृदयस्पर्शी, हृदयभेदी होने के कारण जैसी निकली, वैसी ही संकलित करके प्रस्तुत की गई है ताकि सुज्ञ वाचक को उनके 'डिरेक्ट' शब्द पहुँचे। उनकी हिन्दी यानी गुजराती, अंग्रेजी और हिन्दी का मिश्रण। फिर भी सुनने में, पढ़ने में बहुत मीठी लगती है, नैचुरल लगती है, जीवंत लगती है। जो शब्द हैं, वे भाषाकीय द्रष्टि से सीधे-सादे हैं किन्तु 'ज्ञानी पुरुष' का दर्शन निरावरण है, अत: उनका प्रत्येक वचन आशयपूर्ण, मार्मिक, मौलिक और सामने वाले के व्यू पोइन्ट को एक्ज़ेक्ट समझकर होने के कारण वह श्रोता के दर्शन को सुस्पष्ट खोल देता है और उसे ऊँचाई पर ले जाता है।

- डॉ. नीरू बहन अमीन

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

1. आत्मसाक्षात्कार
2. ज्ञानी पुरुष की पहचान
3. सर्व दु:खों से मुक्ति
4. कर्म का सिद्धांत
5. आत्मबोध
6. मैं कौन हूँ ?
7. पाप-पुण्य
8. भुगते उसी की भूल
9. एडजस्ट एवरीव्हेयर
10. टकराव टालिए
11. हुआ सो न्याय
12. चिंता
13. क्रोध
14. प्रतिक्रमण (सं, ग्रं)
16. दादा भगवान कौन ?
17. पैसों का व्यवहार (सं, ग्रं)
19. अंत:करण का स्वरूप
20. जगत कर्ता कौन ?
21. त्रिमंत्र
22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
23. चमत्कार
24. प्रेम
25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (सं, पू, उ)
28. दान
29. मानव धर्म
30. सेवा-परोपकार
31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार (सं)
34. क्लेश रहित जीवन
35. गुरु-शिष्य
36. अहिंसा
37. सत्य-असत्य के रहस्य
38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार(सं)
40. वाणी, व्यवहार में... (सं)
41. कर्म का विज्ञान
42. सहजता
43. आप्तवाणी - 1
44. आप्तवाणी - 2
45. आप्तवाणी - 3
46. आप्तवाणी - 4
47. आप्तवाणी - 5
48. आप्तवाणी - 6
49. आप्तवाणी - 7
50. आप्तवाणी - 8
51. आप्तवाणी - 9
52. आप्तवाणी - 13 (पू, उ)
54. आप्तवाणी - 14 (भाग-1, भाग-2)
56. ज्ञानी पुरुष (भाग-1)

(सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध)

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट **www.dadabhagwan.org** पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।

संपादकीय

अनादिकाल से जगत् की वास्तविकता जानने का मनुष्य का प्रयत्न है मगर वह सही जान नहीं पाया। मुख्यतः वास्तविकता में मैं कौन हूँ, इस जगत् को चलाने वाला कौन है तथा इस जगत् का रचयिता कौन है, यह जानना है। प्रस्तुत संकलन में सच्चा कर्ता कौन है, यह रहस्य खुला किया गया है।

आम तौर पर अच्छा हुआ तो 'मैंने किया' मान लेता है और बुरा हुआ तो दूसरे पर आक्षेप देता है कि 'इसने बिगाड़ दिया।' नहीं तो 'मेरी ग्रहदशा बिगड़ गई है' बोलेगा या तो 'भगवान ने किया' ऐसा भी आक्षेप दे देता है। यह सब रोंग बिलीफें हैं। भगवान क्या पक्षपात करने वाला है कि आपका नुकशान करे?

यह दुनिया किसने बनाई? अगर बनाने वाला होगा तो उसको किसने बनाया? फिर उसको भी किसने बनाया? यानी उसका अंत ही नहीं है। और दूसरा यह भी प्रश्न उपस्थित होता है कि, दुनिया उसको बनानी ही थी, तो फिर ऐसी कैसी दुनिया बनाई कि जिसमें सभी दुःखी हैं ? किसी को भी सुख नहीं है ? उसकी मज़ा और अपनी सजा, यह कैसा न्याय?!

इस विज्ञान ने साबित किया है कि विश्व में शाश्वत तत्त्व है। शाश्वत यानी जिसकी उत्पत्ति नहीं और जिसका विनाश भी नहीं यानी अनादि-अनंत। अपने भीतर वाला आत्मा भी शाश्वत है। यह जगत् किसी ने नहीं बनाया, उसका नाश भी नहीं है। यह जगत् था, है और रहेगा। उसे बनाने की कहाँ ज़रूरत है? यह विश्व स्वयंभू है और स्वयं संचालित है। भगवान ने तो इसमें कुछ नहीं किया, वह तो ज्ञाता-द्रष्टा-परमानंदी है।

इस काल में कर्ता संबंधी का सिद्धांत पहली बार विश्व को यथार्थ स्वरूप में परम पूज्य दादा भगवान ने दिया है और वह यह है कि इस दुनिया में कोई स्वतंत्र कर्ता नहीं है। इस दुनिया को रचने

वाला या चलाने वाला कोई भी नहीं है। यह जगत् चलता है वह साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स से चलता है। जिसको परम पूज्य दादाश्री 'व्यवस्थित शक्ति' कहते हैं।

जगत् में कोई भी स्वतंत्र कर्ता नहीं है मगर सब नैमितिक कर्ता हैं, सभी निमित्त हैं। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा था कि, 'हे अर्जुन! तू इस युद्ध में निमित्त मात्र है, तू युद्ध का कर्ता नहीं है।'

परम पूज्य दादाश्री ने अनेक दृष्टांत देकर नैमित्तिक कर्ता का सिद्धांत समझाया है। एक कप चाय बनानी हो तो? कोई बोलेगा, मैंने चाय बनाई... मगर वास्तविकता में देखने जाएँ तो पानी, चीनी, चाय की पत्ती, दूध, बर्तन, स्टोव, दियासलाई, कप, कितनी सारी चीज़ें हों तब एक कप चाय बनेगी। तो किसने चाय बनाई? ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) से हुआ। यह तो अज्ञानता से, भ्रांति से अहंकार करता है कि, 'मैंने किया।' मगर कोई भी कार्य सारे संयोगों की वजह से होता है।

प्रस्तुत पुस्तिका में कर्ता का रहस्य परम पूज्य दादाश्री की सादी, सरल भाषा में हृदय में उतर जाए, इस तरह से समझाया गया है।

- डॉ. नीरू बहन अमीन के
जय सच्चिदानंद

जगत् कर्ता कौन?

पज़लसम की वास्तविकता

दादाश्री : इस जगत् के क्रिएटर (रचयिता) को कभी देखा था?

प्रश्नकर्ता : फोटो में देखे हैं।

दादाश्री : इस जगत् के क्रिएटर को? क्रिएटर का फोटो नहीं होता है। फोटो तो, कोई आदमी इधर है, जिसको सब लोग बोलें कि 'ये भगवान हो गया', तो उसका फोटो होता है। क्रिएटर तो बड़ी चीज़ है।

प्रश्नकर्ता : तो हमें यह समझ लेना है कि यह सब मिथ्या है?

दादाश्री : मिथ्या तो नहीं है। मिथ्या तो किसे बोला जाता है कि इधर जल नहीं है, मगर जल दिखता है। ऐसा ये जगत् मिथ्या नहीं है। जगत् भी करेक्ट (सच) है और आत्मा भी करेक्ट है। द वर्ल्ड इज़ करेक्ट बाइ रिलेटिव व्यू पोइन्ट एन्ड आत्मा इज़ करेक्ट बाइ रियल व्यू पोइन्ट। आपको समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : रियल और रिलेटिव का क्या भेद है?

दादाश्री : रियल है, उसको किसी चीज़ का आधार ही नहीं चाहिए। वो अपने खुद के आधार से रहता है। दूसरे के आधार से है,

वो सब रिलेटिव है। एक-दूसरे के आधार से रिलेटिव रहा है। ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट्स ऐन्ड रियल इज़ परमानेन्ट।

प्रश्नकर्ता : जब तक आत्मा है, तब तक मालूम होता है कि आदमी ज़िंदा है। मगर आदमी का अंत तो है भी नहीं न, आखिर तक?

दादाश्री : आदमी का एन्ड नहीं? तो ये गधों का, कुत्तों का सब का एन्ड है?

प्रश्नकर्ता : किसी का अंत नहीं होता है।

दादाश्री : तो ये पज़ल, पज़ल ही रहेगा? पज़ल सॉल्व नहीं हो पाएगा? अगर किसी का अंत नहीं तो ये पज़ल सॉल्व नहीं हो सकता। आपको कभी पज़ल खड़ा नहीं हुआ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, हो जाता है।

दादाश्री : तो इस पज़ल का अंत कभी नहीं आएगा? देखो, बात ऐसी है, पज़ल शब्द ही ऐसा है कि वो स्वयं समाधान लेकर ही आया है। नहीं तो पज़ल शब्द ही नहीं रहेगा। पहले सॉल्यूशन (समाधान) होता है, तो ही पज़ल नाम पड़ेगा। इसमें आपको समझ में नहीं आती, ऐसी कोई चीज़ है? आपको समझने का विचार है मगर समझ में नहीं आती तो ऐसी सब बातें 'ज्ञानी पुरुष' को पूछ लेना। 'ज्ञानी पुरुष' सबकुछ जानते हैं, जगत् की सब चीज़ें वो जानते हैं।

प्रश्नकर्ता : ये जगत् जिसने बनाया? वो साकार है या निराकार है?

दादाश्री : देखो न, जिसने जगत् बनाया है, वो साकार भी नहीं है और निराकार भी नहीं है। 'द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ।'

प्रश्नकर्ता : तो ये ईश्वर ही कराता है?

दादाश्री : ईश्वर नहीं कराता है। ईश्वर इसमें हाथ ही नहीं डालता। ईश्वर हाथ डाले तो उसकी ज़िम्मेदारी, फिर अपनी ज़िम्मेदारी

कुछ नहीं है, फिर हम छूट गए। वो जो दूसरी शक्ति काम करती है, वो हम बता देते हैं। भगवान तो भगवान ही हैं। भगवान ने तो कभी संसार में हाथ ही नहीं डाला। वो तो संसार कैसे चल रहा है, वो सब देखते रहते और खुद परमानंद में रहते हैं।

दुनियादारी में बात करते हैं कि ये सब भगवान ने बनाया है और दूसरी ओर बोलते हैं कि मोक्ष भी है। यानी मोक्ष भी जा सकते हैं। अरे, मोक्ष और भगवान ने सब बनाया, ये दो विरोधाभासी बातें हैं। यदि मोक्ष होता है, तो भगवान की ज़रूरत नहीं और भगवान बनाता है तो मोक्ष की ज़रूरत नहीं। मोक्ष और भगवान दोनों साथ नहीं हो सकते। यदि भगवान ने सब बनाया, तो वो अपना *ऊपरी* (पूज्य, बॉस) हो गया। मगर ऐसा नहीं है। अपना अन्डरहैन्ड (मातहत) भी कोई नहीं है और अपना *ऊपरी* भी कोई नहीं है। तो फिर यह दुनिया किसने बनाई? रचयिता के बिना तो होता ही नहीं न?

प्रश्नकर्ता : अपने हिन्दुस्तान में लोग उसे 'भगवान' कहते हैं और सब वैज्ञानिक (साइन्टिस्ट) उसे कुदरत कहते हैं। मगर कोई शक्ति ज़रूर है कि जो ये सब संचालन कर रही है।

दादाश्री : कंट्रोल तो कोई करता ही नहीं। ये तो खाली कम्प्यूटर है। वो कम्प्यूटर ही जगत् को चलाता है।

प्रश्नकर्ता : कम्प्यूटर को कौन चलाता है?

दादाश्री : उसको चलाने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। ऐसे ही चलता है। ये सब का दिमाग़ है, वो छोटा कम्प्यूटर है और जो जगत् को चलाता है वो बड़ा कम्प्यूटर है। छोटे कम्प्यूटर से सब हिसाब बड़े कम्प्यूटर में चला जाता है।

अभी तो तुम बोलते हो कि मैं चलाता हूँ, मैंने ये किया, मगर तुम्हारा कौन चलाता है?

प्रश्नकर्ता : वैसे तो हमारा भगवान चलाता है।

दादाश्री : भगवान करते हैं, तो आप क्यों करते हैं? जो भगवान करते हैं तो आप कर्ता पद छोड़ दो और आप जो करते हैं तो भगवान की बात छोड़ दो। भगवान ने बोला है कि हम कर्ता नहीं हैं, सब जीव कर्ता है। गाय-भैंस, सबकुछ अपना खुद का करते हैं, क्योंकि उनको दिमाग़ दिया है। वो दिमाग़ से चलते हैं। सब जीव को दिमाग़ दिया है। जैसा दिमाग़ इसको चलाता है, ऐसे चलते हैं, बस! भगवान इसमें हाथ ही नहीं डालते हैं। भगवान तो आपको प्रकाश देंगे, दूसरा कुछ नहीं। दूसरी माथापच्ची तुम करो। दिमाग़ तो दिया है सब को। गाय, बकरी, भैंस सब को दिमाग़ दिया है। वो नीचे उतरते हैं, ऊपर चढ़ते हैं, वो दिमाग़ से चलता है, भगवान चलाता नहीं।

वे साइन्टिस्ट लोग हमें बोलते हैं कि गॉड इज़ नॉट क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड, (भगवान इस जगत् का रचयिता नहीं है) ऐसा हमें लगता है। क्योंकि ऐसा रिसर्च हो गया है कि हम कुछ कर सकते हैं। तो हमने बोल दिया कि 'आप कुछ कर सकते हैं मगर कहाँ तक? इसकी लिमिट है। क्या है? कि दिमाग़ लगाए वहाँ तक।' बुद्धि से कोई ज़्यादा आगे नहीं जा सकता। बुद्धि से चलता है। इधर भगवान का कोई हाथ नहीं है। देखो न, दुनिया के मनुष्य मानते हैं कि भगवान ने सब बनाया है। ऐसा सब लोग, बच्चे भी जानते हैं। वो बात सच्ची नहीं है, वास्तविक नहीं है। वो लौकिक बात है। लौकिक सामान्य लोगों के लिए है। मगर पता करना चाहिए कि फिर सच्ची बात क्या है? वो तो पता करना चाहिए न?!

आपको वास्तविक नहीं चाहिए और व्यू पोइन्ट (दृष्टिकोण) की बात जानना हो तो वो भी बता देंगे कि भगवान ने ही सब बनाया है और भगवान ही सब चलाता है और आपको क्या करना वो भी बता देंगे कि कुछ खराब हुआ तो भगवान की मर्ज़ी बोल दो। नुकसान हुआ तो भी भगवान की मर्ज़ी और फायदा हुआ तो भी भगवान की मर्ज़ी। बच्चे का जन्म हुआ तो भी भगवान की मर्ज़ी (इच्छा) और बच्चा चला गया तो भी भगवान की मर्ज़ी। ऐसा सब बोलोगे तो

आपकी लाइफ अच्छी जाएगी। ये रिलेटिव बात बोलते हैं। वो रियल बात, वास्तविक बात तो नहीं समझ में आ पाएगी, इसलिए ये बात बोलते हैं। इतनी बात समझ गए कि जो कुछ हुआ वो सब भगवान की मर्ज़ी, तो बहुत हो गया।

क्रिएशन का कर्ता कौन?

आप अध्यात्म संबंध में सारे प्रश्न पूछ सकते हैं। उन सब का सॉल्यूशन मिल जाएगा। आपको पज़ल नहीं होता है? हर रोज़ पूरा दिन सब लोगों को पज़ल ही होता है। ये पज़ल में ही सब लोग डिज़ोल्व हो गए हैं (उलझ गए हैं)। आपको कुछ पूछना हो तो पूछना, तो हम सब सॉल्यूशन देंगे। यह वर्ल्ड इटसेल्फ पज़ल (जगत् स्वयं पहेली रूप) हो गया है। हमने इस पज़ल का सॉल्यूशन किया है और आपको भी सॉल्व कर देंगे।

गॉड इज़ इन एवरी क्रीचर व्हेदर विज़िबल आर इनविज़िबल, नॉट इन क्रिएशन। भगवान क्रीचर में है, क्रिएशन में नहीं है।

प्रश्नकर्ता : क्रिएशन कहाँ से आया?

दादाश्री : क्रिएशन तो आदमी के इगोइज़म से उत्पन्न हुआ है। सबकुछ अहंकार से उत्पन्न हुआ है, कोई बनाने वाला नहीं है। जगत् में छः सनातन तत्त्व हैं, इनके विशेष परिणाम से ये जगत् खड़ा हो गया है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर हम क्रिएशन के लिए वापस सोचें कि आखिर क्रिएशन कहाँ से हुआ? तो वो कौन से तत्त्वों से इसका क्रिएशन हुआ?

दादाश्री : वो मैंने एक ही बात बताई कि ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स से यह जगत् खड़ा हो गया है। साइन्टिफिक यानी गुह्य! गुह्य एविडेन्स, गुह्य संयोगों से, जो अपनी समझ में भी नहीं आएँ, ऐसे संयोगों से ये सब हो गया है। आप इधर हम को

आज मिले तो आपको क्या लगता है? कि हम वहाँ गए और हम को 'ज्ञानी पुरुष' मिले। दो ही बात आप बोलेंगे। मगर उसके पीछे तो हंड्रेड बात (बहुत सारे संयोग) हैं। आप तो खाली अहंकार करते हैं, 'हम गए।'

प्रश्नकर्ता : तो फिर अहंकार नहीं करना हो तो ऐसे बोलें कि भगवान की इच्छा थी।

दादाश्री : नहीं, वो भगवान की इच्छा नहीं थी। ऐसे भगवान इच्छा वाला हो, तो भगवान भिखारी बोला जाता। भगवान तो भगवान हैं, वीतराग हैं। उसको कोई इच्छा नहीं होती। भगवान के पास कोई चीज़ की कमी नहीं है।

जगत् चलाने में इच्छा किसकी?

प्रश्नकर्ता : एक विचार ऐसा है कि भगवान की इच्छा के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिलता।

दादाश्री : तो चोर चोरी करता है, वो भी भगवान की इच्छा से करता है? भगवान की मर्ज़ी के बिना ये सब हिलता ही है न? पत्ता तो क्या ये पेड़ भी हिलते हैं। अरे, ये भूकंप भी होता है। ये सब क्या भगवान की मर्ज़ी से होता है?

प्रश्नकर्ता : जितना अच्छा होता है वो सिर्फ भगवान की इच्छा से होता है। बुरा होता है तो, उसमें भगवान की इच्छा नहीं रहती, उसमें।

दादाश्री : तो बुरा किसका है?

प्रश्नकर्ता : वो अपने मन में ऐसी शंका आती है इसलिए ऐसा मानने का होता है।

दादाश्री : देखो, भगवान किधर रहते हैं वो आप जानते नहीं, भगवान क्या करते हैं वो आप जानते नहीं और आप बोलते हैं कि भगवान की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता। ये सब पत्ते

हिलते हैं, वो क्या सब भगवान की इच्छा के विरुद्ध ही हिलते हैं? भगवान को ऐसी कोई इच्छा नहीं है। इच्छा वाले को भगवान ही नहीं बोला जाता। भगवान निरीच्छक रहते हैं। हम 'ज्ञानी पुरुष' भी निरीच्छक हैं तो भगवान तो कैसे निरीच्छक होंगे! भगवान की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिलता, वो बात आपके लिए सच है और दुनिया के लिए भी सच है। मगर उससे आगे जाएँगे तो वहाँ ये सब बातें गलत साबित होंगी। सच्ची बात तो कुछ और ही है। वो सच्ची बात पुस्तकों में नहीं समा सकती। वो तो अवर्णनीय है, अव्यक्त है। ये सब लोग क्या बोलते हैं? पैसा कमाया तो हमने कमाया और नुकसान हुआ तो भगवान ने कर दिया, ऐसा बोलते हैं। नुकसान के लिए ऐसा नहीं बोलते हैं कि 'मैंने नुकसान किया है।' 'भगवान ने हमारा बिगाड़ा, हमारा भागीदार अच्छा नहीं', ऐसा बोलते हैं। नहीं तो बोलेंगे, 'हमारे ग्रह अच्छे नहीं हैं, हमारे लड़के की शादी की तो बहू हमारे यहाँ आई, उस दिन से हम सब दुःखी-दुःखी हो गए, उसके कदम अच्छे नहीं है।'

कितने-कितने आक्षेप करते हैं! फिर दुबारा मनुष्य का जन्म भी नहीं मिले ऐसा आक्षेप करते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। किसी के ऊपर आक्षेप नहीं होना चाहिए। किसी को दुःख नहीं होना चाहिए। पुण्य का उदय होता है, तब आप कुछ भी करो तो अच्छा-अच्छा होगा ही और पाप का उदय आए तब अच्छा करो तो भी खराब हो जाएगा।

भगवान ऐसा प्रेरक नहीं होता। जो भगवान प्रेरक हों तो, चोर लोग भी ऐसे बोलते हैं कि भगवान ने हम को प्रेरणा दी है। भगवान जो चोरी करने की प्रेरणा करता हो तो वो भगवान हो ही नहीं सकता। दान देने की प्रेरणा करता है तो वो भगवान नहीं हो सकता। क्या चोरी करने की प्रेरणा, दान करने की प्रेरणा करता है वो भगवान बोला जाता है? कराता है वो भगवान बोला जाता है? पर लोगों ने भगवान को प्रेरक कहा।

लोगों ने तो तरह-तरह का भगवान को कहा। किसी ने कर्म का फल देने वाला कहा। कर्म करता हूँ मैं और फल भगवान दे? नहीं तो, अच्छा किया तो भगवान ने किया और बुरा किया तो भी भगवान ने किया, ऐसा बोल दो।

प्रश्नकर्ता : मगर मैं ऐसे कहता हूँ कि अच्छा तो भगवान कराता है और बुरा शैतान कराता है।

दादाश्री : कोई शैतान दुनिया में है ही नहीं। दो प्रकार की बुद्धि होती है। एक सद्बुद्धि होती है और एक कुबुद्धि होती है। कुबुद्धि को शैतान बोलते हैं और सद्बुद्धि को भगवान बोलते हैं।

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल ठीक बात है।

दादाश्री : हाँ, भगवान कुछ करता नहीं है। भगवान तो वीतराग है। भगवान इसमें हाथ ही डालता नहीं। सिर्फ उसकी हाज़िरी से सब चल रहा है। वो हाज़िर नहीं होता तो नहीं चलता। इस शरीर में उसकी हाज़िरी है, तो ये सब चल रहा है। वो कुछ नहीं करता। वो तो लाइट (प्रकाश) ही देता है। जिसको चोरी करना है उसको भी प्रकाश देता है और जिसको दान देने का है उसको भी प्रकाश देता है। भगवान दूसरा कुछ नहीं करता है।

भगवान, इच्छाशक्ति वाला?

हम को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। हमने कोई चीज़ की इच्छा नहीं की है, मगर हमारे पास सब चीज़ अपने आप आ जाती है।

प्रश्नकर्ता : वो भी करके देखा कि किसी चीज़ की इच्छा नहीं करना तो वो खुद ही चली आएगी, फिर भी नहीं आती।

दादाश्री : हाँ, वह इसलिए कि क्रेडिट साइड (पुण्य का खाता) में कुछ तो होना चाहिए न? हम इच्छा नहीं करते हैं तो भी सब आता है, तो हमारी क्रेडिट साइड (पुण्याई) कितनी बड़ी है!

इच्छा करने वाले को शास्त्र क्या बोलता है? उसको भिखारी बोलता है। कितने मनुष्य पैसों के भिखारी हैं, कितने स्त्री-विषय के भिखारी हैं, कितने मान के भिखारी हैं, कितने कीर्ति के भिखारी हैं, कोई मंदिर बनाने का भिखारी है। सब भीख, भीख, भीख ही है।

हमें किसी प्रकार की भीख नहीं, तो सारे जगत् की लगाम हमारे पास है। जिसे किसी प्रकार की भी इच्छा नहीं है, उसे वो पद मिल जाता है। जो पद हमें मिला है, वो पद आपको भी मिल सकता है। मगर भीख वाले को नहीं मिलता।

प्रश्नकर्ता : हम भीख माँगें तो भी हमें नहीं मिले, हमें?

दादाश्री : हाँ, इसके लिए आपकी क्रेडिट साइड नहीं है। पहले क्रेडिट साइड चाहिए। जितना क्रेडिट है, इतनी आपको कोई तकलीफ नहीं है। भगवान को इच्छा नहीं रहती। भगवान तो भगवान हैं।

प्रश्नकर्ता : तो इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति, ज्ञानशक्ति वो किसकी हैं?

दादाश्री : वो सब भगवान की नहीं हैं। ये कोई शक्ति भगवान में नहीं है। भगवान में इच्छाशक्ति भी नहीं है, क्रियाशक्ति भी नहीं और ज्ञानशक्ति भी नहीं है। तीनों शक्तियाँ भगवान में नहीं हैं। भगवान तो खाली विज्ञानशक्ति हैं, बस!

अंत, दुनिया का या 'व्यवहार' का?

प्रश्नकर्ता : यह दुनिया कैसे पैदा हुई? सब से पहले क्या पैदा हुआ था?

दादाश्री : पहला कोई था ही नहीं। ऐसे ही चल रहा था, अनादि से चल रहा है। पहला ऐसा कोई था ही नहीं। जो पहले है, उसका अंत भी होता है। दुनिया का आदि भी नहीं और अंत भी नहीं।

प्रश्नकर्ता : जैसे, जो चीज़ पैदा हुई तो उसका बीज तो पहले मौजूद होगा न दुनिया में?

दादाश्री : वो बात बुद्धिजन्य है, ज्ञानजन्य नहीं है। खुदा के ज्ञान में कोई पहला था ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : मगर खुदा ने मिट्टी, पानी, आग और हवा ये चारों मिलाकर इंसान पैदा किया है न?

दादाश्री : नहीं, खुदा ऐसे बनाए तो वो तो मज़दूर हो गया, फिर मज़दूर में और उनमें क्या फर्क? औलिया भी मज़दूरी नहीं करता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर ये दुनिया क्या है?

दादाश्री : आप किसे दुनिया बोलते हैं? आँख से दिखाई देता है, कान से सुनाई देता है, नाक से, जीभ से और स्पर्श से, आपकी पाँच इन्द्रियों से आपको जो अनुभव होता है, उसे आप दुनिया बोलते हैं? वो सब रिलेटिव है और ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट्स।

प्रश्नकर्ता : इस दुनिया का अंत है क्या?

दादाश्री : नहीं, इस दुनिया का अंत कभी नहीं आने वाला। मगर आप समसरण मार्ग में चल रहे हैं, उसका अंत आ जाएगा। जितना माइल आप चलते हैं, इतना माइल कम हो जाता है और इसका अंत भी है।

प्रश्नकर्ता : वो अंत में क्या है?

दादाश्री : अंत में आप परमानेन्ट (अविनाशी) हो सकते हैं। अभी तो आप टेम्परेरी (विनाशी) हैं, क्योंकि 'मैं रविन्द्र हूँ, मैं डॉक्टर हूँ' ऐसी सब आपको रोंग बिलीफ (गलत मान्यता) है।

प्रश्नकर्ता : मृत्यु के बाद कहाँ जाते हैं?

दादाश्री : इधर अभी ग्यारहवें माइल पर है, वो बारहवें माइल पर जाता है। इधर दसवें माइल पर है, वो ग्यारहवें माइल पर जाता है। कोई दूसरी जगह पर नहीं जाता, वो ही रास्ता है। जितना रास्ता उसने पार किया, उतना आगे चला जाता है। वो आगे ही बढ़ता है। जब यह रास्ता पूरा होता है, तब वो स्वतंत्र हो जाता है। तब तक स्वतंत्र नहीं है, परवश ही रहता है।

आपका बॉस (मालिक) है? बॉस है तब तक ज़िंदगी में कितनी तकलीफ रहती है? कितनी परवशता रहती है?

प्रश्नकर्ता : पसंद तो नहीं है।

दादाश्री : हाँ, तो इन्डिपेन्डेन्ट लाइफ (स्वतंत्र ज़िंदगी)चाहिए। यह जगत् किसी ने बनाया नहीं है। द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ। गॉड हैज़ नॉट पज़ल्ड दिस वर्ल्ड एट ऑल! खुद ही, स्वयं पहेली बन गया है। आपको पज़ल होता है या नहीं? कोई बोले कि 'रविन्द्र अच्छा आदमी नहीं है।' इतना सुनते ही आपको कुछ पज़ल हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : होता है।

दादाश्री : क्यों पज़ल होता है? क्योंकि यह जगत् खुद पज़ल (पहेली) है।

दुर्घटना क्या है?

प्रश्नकर्ता : अगर भगवान की इच्छा मान ली तो दुर्घटना जैसा कुछ नहीं है।

दादाश्री : हाँ, मगर दुर्घटना होती है?

इस जगत् में कभी दुर्घटना होती ही नहीं। दुर्घटना होती है, वैसा नहीं समझने वाला छोटा आदमी बोलता है। मगर बड़ा, समझ वाला आदमी नहीं बोलता है कि 'अरे, दुर्घटना हो गई!!' जो कच्ची

समझ वाला है, वो बोलता कि ये दुर्घटना है, मगर सच्ची समझ वाला तो कभी नहीं बोलेगा। दुर्घटना तो कभी होती ही नहीं। आपको क्या लगता है, दुर्घटना होती है कभी?

दुर्घटना किसे बोलते हैं? ऐन इन्सिडेन्ट हैज़ सो मेनी कॉज़ेज़ ऐन्ड ऐन एक्सिडेन्ट हैज़ टू मेनी कॉज़ेज़। तो दुर्घटना (आम तौर पर) कभी होती ही नहीं। दुर्घटना है उसके तो कॉज़ेज़ ज़्यादा रहते हैं और 'इन्सिडेन्ट' है उसके कम कॉज़ेज़ रहते हैं। पूरा दिन इन्सिडेन्ट ही रहता है। कभी-कभी ज़्यादा कॉज़ेज़ होते हैं उसको एक्सिडेन्ट बोलते हैं।

बम्बई में हाइवे क्रॉस करते समय किसी आदमी के सामने गाड़ी आ जाए तो गाड़ी वाला ड्राइवर क्या बोलेगा कि हमने कोशिश करके इसे बचा दिया। मगर वो आदमी बोलता है कि नहीं, मैं ही ऐसा कूदा कि बच गया। ये दोनों बातें गलत हैं। थोड़ा आगे जाने पर वही ड्राइवर दूसरे आदमी की टांग तोड़ देता है। ऐसा कैसा बचाने वाला आया!!!

(आम तौर पर) एक्सिडेन्ट कभी होता ही नहीं। ये तो लोगों को पता नहीं चलता इसलिए बोलते हैं कि ये एक्सिडेन्ट हो गया। सारा दिन इन्सिडेन्ट (घटना) ही होते हैं।

यह दुनिया, योजनाबद्ध या एक्सिडेन्ट?

मनुष्य कितना भी अहंकार करे, मगर नेचर (प्रकृति) का जो प्लानिंग (योजना) है, उसको बदलने वाला कोई नहीं। जो प्लानिंग बदल सके तो दुनिया में एक भी लेडी (स्त्री) नहीं रहेगी। सभी स्त्रियाँ पुरुष हो जाए। मगर किसी के हाथ में कुछ भी नहीं है।

जो नेचर का प्लानिंग है न, उसी प्लानिंग के हिसाब से सब होता है। नेचर का प्लानिंग क्या चीज़ है कि हिन्दुस्तान में इतनी औरतें चाहिए, इतने आदमी चाहिए, इतने बाल काटने वाले चाहिए, इतने बढ़ई चाहिए, इतने लोहार चाहिए। हरेक चीज़ का ऐसा प्रमाण प्लानिंग में है। वो कोई नहीं बदल सकता।

प्रश्नकर्ता : ये कौन डिसाइड (निर्णय) करता है?

दादाश्री : ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (सिर्फ वैज्ञानिक सांयोगिक प्रमाण) है। हिन्दुस्तान में इतने सैनिक चाहिए, इतना पुलिस वाला चाहिए, नहीं तो पुलिस की नौकरी कोई करे ही नहीं। इतने मकान बनाने वाले चाहिए, इतने वकील चाहिए, इतने डॉक्टर चाहिए। डॉक्टर की कमाई बहुत अच्छी है, तो सब आदमी डॉक्टर हो जाते। मगर सब आदमी डॉक्टर नहीं बन सकते। जो कुदरत के प्लानिंग में नहीं है, वो कोई करने वाला ही नहीं। कुदरत की प्लानिंग में कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। खुद भगवान भी परिवर्तन नहीं कर सकता। प्लानिंग यानी प्लानिंग!! उस प्लानिंग में सबकुछ है। कुदरत का प्लानिंग ऐसा है कि दुनिया में हरेक चीज़ है। मगर अपना प्रारब्ध नहीं है, तो नहीं मिलती है। नहीं तो हरेक चीज़, जितनी तुम्हारी हैं उतनी चीज़ें इधर ही हैं। कुदरत का प्लानिंग बहुत अच्छा है। उसमें कभी कोई बढ़ौतरी नहीं करने वाला और उस प्लानिंग में ही रहना पड़ता है। मगर अहंकार किया, उसका दु:ख होता है। जो अहंकार करता है, उसके बदले में उसको दु:ख आता है। तो भी प्लानिंग में तो कोई भी बदलाव नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : अभी एर इन्डिया का प्लेन (विमान) गिर गया, उसमें 215 आदमी मर गए तो उसमें भी कुछ प्लानिंग होगा?

दादाश्री : हाँ, सब प्लानिंग ही है। प्लानिंग के बाहर कुछ चलता ही नहीं। प्लानिंग के बाहर कोई चीज़ नहीं होती। एक्ज़ेक्ट प्लानिंग है! ऐसा एक्सिडेन्ट देखकर मनुष्यों को आश्चर्य होता है कि, ये क्या हुआ, ये क्या हो गया? मगर जानवरों को कोई आश्चर्य नहीं होता। कितनी ही गायें देखती हैं, गधे देखते हैं, लेकिन उनको कोई आश्चर्य नहीं होता। सब चलता रहता है। गाय, गधा, ये सब मानते हैं कि कुदरत की प्लानिंग के मुताबिक हुआ है, इसमें क्या देखना!

ज्योतिषज्ञान की सच्चाई

प्रश्नकर्ता : आप कृपा करें तो मुझे ज्योतिष का अर्थ क्या है वो समझना था।

दादाश्री : इस दुनिया को भगवान नहीं चलाता, दूसरी शक्ति चलाती है। इसलिए अपना ज्योतिषज्ञान करेक्ट (सही) है। अगर भगवान चलाता होता और किसी आदमी ने बहुत भक्ति की होती तो ज्योतिष गलत साबित हो जाता। ज्योतिष तो बिल्कुल सही है, मगर जानने वालों की कमी है। वे पूरा-पूरा जानते नहीं हैं। सब भावाभाव जो है न, वो सब इनको समझ में नहीं आता है। स्पष्टतया समझ में नहीं आता है। नहीं तो ज्योतिष तो सही ही है, वो तो विज्ञान है।

समस्त दुनिया के सब लोग 'लट्टू' (टॉप) हैं। वो खुद कोई कर्म बाँध सकता ही नहीं। खुद कर्म बाँधे, तो ऐसा नहीं बाँधेगा। उसके पीछे निमित्त है। इस जगत् में संडास जाने की (स्वतंत्र) शक्ति किसी को भी नहीं है। जब उसका बंद हो जाएगा तो मालूम हो कि अपनी खुद की शक्ति नहीं थी। उसमें डॉक्टर की ज़रूरत पड़ती है।

प्रश्नकर्ता : मैं ऐसा समझता हूँ कि दूसरी शक्ति जो चलाती है, वह ग्रहमान शक्ति है?

दादाश्री : ये सब पार्लियामेन्ट वाली शक्ति चलाती है। आत्मा की हाज़िरी से ये पार्लियामेन्ट (अपने भीतर की संसद) चल रही है। पार्लियामेन्ट में उसका केस (मुकदमा) जाता है कि, 'इस आदमी के हाथ से नैमित्तिक कर्म ऐसा हो गया है।' फिर पार्लियामेन्ट में उसका केस चलता है। पार्लियामेन्ट जो फैसला करती है, वैसा उसको फल मिलता है।

हकीकत में ग्रहमान शक्ति चलाती है, ये बात भी सही नहीं है। मगर जो शक्ति चलाती है, वो तो दूसरी शक्ति है। ग्रहमान तो उस शक्ति के अधिकार से चलता है। पार्लियामेन्ट से जैसे ऑर्डर (आदेश) होता है, वैसे ही इधर कलेक्टर (जिलाधिकारी) काम करता

है, वैसा ही वो सब ग्रह काम करते हैं। देखो न, हमारे सब ग्रह चले गए हैं, इसलिए हमारे यहाँ ग्रहों की सर्विस (सेवा) ही नहीं है। फिर हम को कोई ग्रह स्पर्श नहीं करते, मगर वो शक्ति हम को स्पर्श करती है। ग्रह का हमारे पर अधिकार नहीं है। हम पर उस दूसरी शक्ति का डायरेक्ट (सीधा) अधिकार है, बीच में इन ग्रहों का अधिकार नहीं है। आपके अंदर, सब के अंदर ग्रह रहते हैं। हमें कोई ग्रह है ही नहीं। हम को दुराग्रह नहीं, मताग्रह नहीं, हठाग्रह नहीं, कदाग्रह नहीं। हम को नव ग्रह में से कोई ग्रह नहीं रहता। हम पर सभी ग्रह राज़ी रहते हैं। वो सब हमारे साथ मित्र के माफिक रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : सब ग्रह, तारा ये क्या हैं?

दादाश्री : वो सब देवलोक हैं। उसको ज्योतिष्क देव बोला जाता है। देवगति में सारी ज़िंदगी क्रेडिट (अच्छा फल) ही मिलती है, उधर डेबिट (बुरा फल) नहीं होती है। उधर बहुत इन्द्रिय सुख है, मगर सनातन सुख नहीं है।

प्रश्नकर्ता : हम को तो सच्चा सुख चाहिए।

दादाश्री : सच्चा सुख तो, सेल्फ रियलाइज़ेशन (आत्म साक्षात्कार) हो जाए तब मिलता है, सनातन सुख मिलता है।

आप क्या कर सकते हो?

आप सुबह में नींद में से उठते हैं, फिर क्या-क्या करते हैं?

प्रश्नकर्ता : उठने के बाद नहाना, नाश्ता-पानी फिर सब कामकाज करना ही पड़ता है न?

दादाश्री : तो वो सब काम सारा दिन आप ही करते हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ, करना तो पड़ेगा ही ना?

दादाश्री : नहीं, आप करते हो कि करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : मैं ही करता हूँ।

दादाश्री : मगर आप ही करते हैं कि दूसरा कोई करवाता है आपके पास?

प्रश्नकर्ता : कोई नहीं करवाता।

दादाश्री : तो आप ही करते हो? तो कभी तबीयत खराब हो जाए तो संडास बंद हो जाता है, तो फिर आप कर सकते हो?

प्रश्नकर्ता : वो तो शरीर की चीज़ है और शरीर पर उतना कंट्रोल (नियंत्रण) रहना बहुत मुश्किल चीज़ है।

दादाश्री : शरीर पर कंट्रोल नहीं है? चलो जाने दो, मगर नींद कभी नहीं आती तो आप प्रयत्न करते हैं तो नींद आ जाती है?

प्रश्नकर्ता : अगर सही प्रयत्न करूँ तो आ जाती है।

दादाश्री : इस दुनिया में कोई ऐसा आदमी जन्मा नहीं है कि संडास जाने की उसकी स्वतंत्र शक्ति हो। सब लोग भ्रांति से बोलते हैं, मैंने ये किया, मैंने ये किया। वो सब भ्रांति है, सच्ची बात नहीं है। सच्ची बात समझनी चाहिए। वो कैसे समझ में आएगी? वो किसी व्यू पोइन्ट से समझ में नहीं आएगी।

'ये मैं हूँ, ये मैंने किया', वो सब अहंकार है और करने वाला दूसरा है। भगवान भी नहीं करता है और आप भी नहीं करते हैं। वो जानना है तो वास्तविक आपको बोलूँ, नहीं तो आप जो जानते हैं वो ही बोलूँ कि भगवान भी करता है और आप भी करते हैं।

प्रश्नकर्ता : नहीं, हम तो कुछ नहीं करते।

दादाश्री : तो आपका धंधा आप खुद नहीं करते, तो कौन करता है?

प्रश्नकर्ता : मगर हम तो क्या है कि भगवान के हाथ के खिलौने हैं, वो जैसा चाहे वैसा करवाएँ।

दादाश्री : नहीं, नहीं, यू आर नॉट टॉय्स ऑफ गॉड! (आप भगवान के खिलौने नहीं हैं।)

प्रश्नकर्ता : फिर क्या हैं ?

दादाश्री : यू योरसेल्फ इज़ गॉड! यू डोन्ट नो यॉर एबिलिटी, यॉर नॉलेज!! वो कुछ जानते नहीं हो, इसलिए आप 'मैं भगवान का टॉय (खिलौना) हूँ' बोलते हैं।

सच्ची फिलॉसोफी (तत्त्वज्ञान) समझो तो ये फिलॉसोफी बहुत गूढ़ है।

हिन्दू धर्म वाला भी बोलता है कि 'मैंने किया', मुस्लिम धर्म वाला भी बोलता है कि 'मैंने किया', जैन लोग भी बोलते हैं, 'मैंने किया'। सब लोग 'मैंने किया' बोलते हैं। वो बात वास्तविक नहीं है।

इधर कभी सुनी नहीं, कोई पुस्तक में लिखी नहीं, ऐसी नई चीज़ है। पहले कभी नहीं हुआ है, ऐसा हुआ है। दस लाख साल में कभी हुई नहीं ऐसी चीज़ है। सब लोगों ने अभी तक यही कहा है कि, 'ये करो, ये करो, ये करो' मगर जिधर 'करने' का है वहाँ मोक्ष नहीं है और जहाँ मोक्ष है, वहाँ करने का कुछ भी नहीं।

तुम क्या करते हो ? पूरा दिन तुम कुछ मेहनत करते हो ?

प्रश्नकर्ता : मेहनत तो करते हैं न ?

दादाश्री : क्या मेहनत करते हो ? कोई मेहनत करता ही नहीं है। तो क्या करता है ? खाली अहंकार करते हैं कि 'ये मैंने किया।' मेहनत तो बैल करता है। कोई आदमी मेहनत करता है? तुमने देखा है ?

प्रश्नकर्ता : फिर यह ऑफिस में जाते हैं, काम करते हैं, वह क्या है ?

दादाश्री : ये तो रोंग बिलीफ है कि 'मैं करता हूँ।' ये तो

ऑटोमैटिक (अपने आप) हो जाता है। संडास आप करते हो कि ऐसे ही हो जाता है?! लोग बोलते हैं कि 'मैं संडास गया था।' नींद आप लेते हैं कि ऐसे ही आ जाती है?

प्रश्नकर्ता : वैसे ही आ जाती है।

दादाश्री : तो उठने का हो तब आप उठते हैं कि कोई उठाता है?

प्रश्नकर्ता : वैसे ही उठ जाते हैं।

दादाश्री : हाँ, ये आपके हाथ में नहीं है। तो आपके हाथ में क्या है? आप तो खाली अहंकार करते हैं कि, 'मैंने ये किया, मैं सो गया।' फिर कभी बोलते हैं कि 'हम को आज तो नींद ही नहीं आई।' ये सब विरोधाभास है। 'हम सुबह में जल्दी उठते हैं' कहते हैं, तो फिर घड़ी क्यों रखते हैं? और बोलते हैं, 'हमने खाया।' ओहोहो! बड़ा खाने वाला आया!!! वो तो दांत चबाते हैं, जीभ स्वाद लेती है और ये हाथ काम करते हैं, वो सब मिकेनिकली हो जाता है। तुम तो खाली अहंकार करते हो।

प्रश्नकर्ता : मैं क्या करता हूँ फिर?

दादाश्री : आप कुछ नहीं करते हैं। आप काम में खराबी ही करते हैं (अहंकार करके)।

अनंत शक्ति वाला, बंधन में

ये सब मिकेनिकल (यंत्रवत्) होता है। शादी भी करता है, वो मिकेनिकल हो जाती है। लड़का भी होता है, वो मिकेनिकल होता है। आप खुद कौन हैं, यह रियलाइज़ (साक्षात्कार) हो जाए, फिर आप मिकेनिकल नहीं रहोगे। आप खुद करते हैं या भगवान करवाता है, उसकी तो तलाश करनी चाहिए न? आप जो खुद करते हैं, तो आपकी मर्ज़ी के मुताबिक हरेक चीज़ हो सकती है? ऐसा 100% हो सकता है?

प्रश्नकर्ता : 100% तो नहीं होता है।

दादाश्री : हाँ, तो आप खुद कर्ता नहीं हैं। मगर आपको ऐसा लगता है कि मैं ही कर्ता हूँ।

प्रश्नकर्ता : भगवान करवाता है।

दादाश्री : नहीं, ये भगवान भी नहीं कराता है। अगर भगवान करवाए तो, चोर लोग बोलते हैं, 'हम को भगवान प्रेरणा करता है।' अरे बाबा, भगवान ऐसी प्रेरणा करने वाला ही नहीं है। वो इसमें हाथ नहीं डालता।

व्यवहार-जगत् में, अपनी सत्ता कितनी?

तुम्हारी इच्छा नहीं हो तो भी तुम कर्म बाँधते हो। क्योंकि आप ऐसा मानते हैं कि 'मैं कर्ता हूँ और ये हमने किया, ये हमने किया।'

प्रश्नकर्ता : जो आदमी सब से पहले जन्मा, उसको तो कोई कर्म नहीं न?

दादाश्री : कोई पहले जन्मा ही नहीं। इस जगत् में पहले-पीछे कोई चीज़ है ही नहीं। सर्कल (गोल) है, उसमें कौन पहले? इसमें कोई पहला नहीं, आदि नहीं, अंत नहीं। सब अनादि-अनंत है। कोई पहले जन्मा है, वो बुद्धि की बात है। बुद्धि से सॉल्व ही नहीं होता है, ज्ञान से सॉल्यूशन आता है। छः तत्त्व अविनाशी हैं। इन छः तत्त्वों का निरंतर समसरण होता है, यानी परिवर्तन होता है। इससे सब अवस्थाएँ खड़ी हो जाती हैं और सब अवस्थाएँ विनाशी हैं।

साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स यानी क्या? समय, स्पेस (जगह), कर्म का फल, ये सब इकट्ठा हो जाएँ तब फाँसी की सजा हो जाती है। सजा देना जज (न्यायाधीश) के हाथ में नहीं है। कोई आदमी ऐसा जन्मा नहीं कि जिसके हाथ में स्वतंत्र शक्ति हो, क्योंकि सब परशक्ति है। कुदरत अपने फेवर (पक्ष) में है तो आप मान लेते हैं, 'हमने किया, हम कर्ता हैं।'

जहाँ करने का होता है, वहाँ भ्रांति बढ़ती है। फिर जो कुछ भी करता है उससे भ्रांति और बढ़ जाती है। 'ज्ञानी पुरुष' मिले तो करने का कुछ नहीं है। करने से भ्रांति बढ़ जाती है। जप करोगे तो भ्रांति बढ़ जाती है। तप करोगे तो भ्रांति बढ़ जाती है, उपवास करोगे तो भ्रांति बढ़ जाती है। पुस्तक पढ़ा करें तो भ्रांति बढ़ जाती है। हमने ये किया, हमने वो किया, वो सब भ्रांति है। 'ज्ञानी पुरुष' की कृपा मिल गई तो 'करने' का कुछ नहीं, फिर सब सहज होता है।

कोई आदमी खाना खा सकता ही नहीं। केवल अहंकार करता है कि मैंने खाना खाया। फिर बीमार क्यों हो जाता है? बीमार हो गया तब क्यों नहीं खा सकता? तो पहले भी खाने का प्रयत्न तुम्हारा था? पहले खाते थे और अभी क्यों नहीं खाता है? ऐसा कभी विचार ही नहीं किया? ये सब नेचर (कुदरत) ही चलाती है, भगवान नहीं चलाता। रात को जब सो जाते हैं तब भी दुनिया चल रही होती है। दुनिया एक मिनिट भी खड़ी नहीं रहती। कोई आदमी दारू पी के गिर जाता है, तो भी दुनिया चल रही होती है। कभी आपने ब्रान्डी पी थी?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : उस टाइम भी संसार चलता रहता है, खड़ा नहीं रहता। आप दारू पी के दिमाग़ में किसी भी मस्ती में हैं, मगर दुनिया चल रही होती है, वो रुक नहीं जाती।

संसार का व्यवहार तुम्हारे जन्म के पहले भी चलता था और तुम्हारे मरने के बाद भी चलेगा। संसार व्यवहार तो सापेक्ष है। लोग क्या बोलते हैं कि, 'हम नहीं होते तो क्या होता? दुनिया ऐसी हो जाती।'

वो बोदरेशन (झंझट) छोड़ दो। वो सब अहंकार का बोदरेशन है। हम ऐसा करते हैं, हमने बच्चों को बड़ा किया, हम बच्चों को पढ़ाते हैं, हमने ये किया, हमने वो किया, वो सब अहंकार है। एक

आदमी ने गाय मारने का विचार किया और एक आदमी ने गाय छुड़ाने का विचार किया तो भगवान के वहाँ कौन से आदमी की कीमत है? भगवान क्या बोलते हैं कि 'यहाँ किसी की कीमत नहीं है। तुम मारने का अहंकार करते हो, वो बचाने का अहंकार करता है। हमारे यहाँ अहंकार वाला नहीं चलेगा।' अहंकार नहीं करना चाहिए कि 'मैंने ये त्यागा।' अनंत जन्मों से वो ही करता है न? इससे फायदा क्या है? रिलेटिव फायदा है। मनुष्य में से देवगति में जाता है। मगर रियल फायदा नहीं मिलेगा। रियल फायदा तो मुक्त पुरुष मिल जाएँ, मोक्षदाता पुरुष मिल जाएँ और मोक्ष का दान मिले तो काम होगा।

एक ब्राह्मण के दो लड़के थे। एक तीन साल का और एक डेढ़ साल का। वह ब्राह्मण मर गया और उसकी औरत भी मर गई। गाँव में दूसरा ब्राह्मण उन लड़कों को लेने को तैयार नहीं हुआ। गाँव में एक क्षत्रिय था, उसको लड़का नहीं था। वो बोलने लगा कि 'हमें एक लड़का दे दो।' तो गाँव वालों ने बड़ा लड़का दे दिया। दूसरे डेढ़ साल के लड़के को कोई लेने को तैयार नहीं हुआ। फिर एक हरिजन बोला कि 'मेरे को लड़का नहीं है, तो हमें दे दो तो बहुत मेहरबानी!' तो गाँव वालों ने विचार किया कि ये बिचारा मर जाएगा, इससे हरिजन के वहाँ जाए तो ठीक है। ज़िंदा तो रहेगा। तो दूसरे लड़के को हरिजन ले गया।

दोनों लड़के बड़े होने लगे। क्षत्रिय के पास वाला बीस साल का हुआ तो हरिजन के पास वाला अठारह साल का हो गया। हरिजन वाला लड़का क्या करता था? दारू बनाता था, दारू पीता भी था और दारू बेचता भी था। क्षत्रिय के पास जो लड़का था उसको समझ में आ गया कि दारू पीना खराब है, ये अच्छी चीज़ नहीं है। दोनों ही भाई ब्राह्मण थे। मगर एक को हरिजन का संजोग मिल गया, दूसरे को क्षत्रिय का अच्छा संजोग मिल गया। किसी ने भगवान को पूछा कि इन दोनों में कौन सा अच्छा है? तो भगवान ने बोल दिया कि 'दारू नहीं पीने का अहंकार करता है और दूसरा दारू पीने का अहंकार

करता है। मोक्ष के लिए दोनों काम के नहीं हैं। अपनी ज़िम्मेदारी पर करते हैं। जो पीने का अहंकार करता है उसकी अपनी ज़िम्मेदारी है। नहीं पीने का अहंकार करता है उसकी भी अपनी ज़िम्मेदारी है।'

सच्ची बात का समाधान ज़रूर होना चाहिए। फिर शंका नहीं रहेगी।

हम बोलते हैं कि ये सब मात्र साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। भगवान को कुछ करना नहीं पड़ता। ऐसे ही संजोग मिल जाते हैं और काम हो जाता है। साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) तरीके से ही होता है पर आदमी बोलता है कि 'मैंने ये किया, मैंने वो किया', वो खाली अहंकार है।

प्रश्नकर्ता : वह ठीक है कि अहंकार नहीं होना चाहिए, मगर कुछ प्रवृत्ति तो करनी ही पड़ेगी न? बगैर किए कुछ होगा ही नहीं।

दादाश्री : प्रवृत्ति तो दूसरी शक्ति तुम्हारे पास करवाती है। आपको इसमें अहंकार करने की कोई ज़रूरत नहीं है। वो शक्ति ही सब करवाती है। आपको देखने की ज़रूरत है कि, 'क्या हो रहा है। ये रविन्द्र क्या कर रहा है', वो आपको देखने की ज़रूरत है। काम सब करने का, और बोलने का भी कि 'ये मैंने किया' लेकिन ड्रामेटिक (नाटकीय) बोलने का। मगर बिलीफ (मान्यता) में नहीं होना चाहिए कि 'ये मैंने किया।' ये बिलीफ में रहता है कि 'ये मैंने किया' वो ही गलती है। जैसे ड्रामा (नाटक) में भर्तृहरि का अभिनय करता है। मगर वो अंदर जानता है कि मैं लक्ष्मीचंद हूँ। वो यह नहीं भूलता। वो जानता है कि, 'मैं लक्ष्मीचंद हूँ', इसलिए भर्तृहरि के नाटक में उसको राग-द्वेष नहीं होता। ऐसा खुद को पहचान लिया, फिर राग-द्वेष नहीं होता। ये सब नाटक ही है। खुद परमानेन्ट हैं और ड्रामा (अभिनय) करते हैं। इधर इसका लड़का हो के आया, वो ड्रामा पूरा हो जाएगा, फिर दूसरे के वहाँ ड्रामा करेगा, फिर तीसरे के वहाँ ड्रामा करेगा। द वर्ल्ड इज़ द ड्रामा इटसेल्फ। समझ गए न? अभी आप रविन्द्र का

ड्रामा करते हैं। इस ड्रामा में मारने का, मार खाने का, रोने का, सबकुछ करना, मगर राग-द्वेष नहीं करना। ऐसे-वैसे सब बात करने का मगर सुपरफ्लुअस (दिखावे जैसा), पीछे कुछ नहीं, ऐसा रहने का। ये ड्रामा है, इसका रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) भी हो गया है। आप इसमें नया कुछ करते ही नहीं।

जगत् कर्ता - वास्तव में कौन?

ये शास्त्र के बाहर की बातें हैं। हमें दो तरह की बातें करनी पड़ती हैं। आप जैसा बहुत विचारशील आदमी हो, वह पूछे कि 'ये दुनिया किसने बनाई?' तो हम बोलेंगे कि 'गॉड इज़ नॉट द क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड एट ऑल!' (भगवान इस दुनिया का रचयिता बिल्कुल ही नहीं है।) मगर आम लोग हमें पूछें, और बड़ी सभा में ऐसा पूछें तो हम ऐसा बोलेंगे कि गॉड इज़ द क्रिएटर (भगवान रचयिता है)। क्योंकि वो फैक्ट (तथ्य) उनकी समझ में नहीं आएगा। जो बात उनकी समझ में आए वो ही बात बोलो। उनको समझ में नहीं आए ऐसी बात बोलेंगे तो उनका अवलंबन टूट जाएगा और बिना अवलंबन आदमी ज़िंदा नहीं रह सकता।

गॉड इज़ द क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड (भगवान इस दुनिया का रचयिता है) यह बात भ्रांत भाषा में सही है, उस व्यू पोइन्ट (दृष्टिकोण) से सही है।

व्यू पोइन्ट वाला हो तो उनका प्रारब्ध हम देख लेते हैं कि इनके प्रारब्ध में ये हमारी फैक्ट (यथार्थ) चीज़ नहीं है, तो हम उनके व्यू पोइन्ट के मुताबिक ही सब हेल्प (मदद) देते हैं। तो इससे वो आगे बढ़ते हैं।

भगवान ने ये दुनिया बनाई ये बात रियल नहीं है। वो सब रिलेटिव है। रिलेटिव की ओर तो अनंत बार गया, मगर अपना काम संतोषकारक कभी नहीं हुआ। उसके लिए रियल के पास ही जाना पड़ेगा।

आप जो जानते हैं उसके आगे भी जानना तो पड़ेगा न? अभी दुनिया में जो ज्ञान चल रहा है, उसको आपने मान लिया है कि वो ही सच्चा ज्ञान है, मगर वो तो लौकिक ज्ञान है। इससे बहुत आगे जाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : इतनी बड़ी दुनिया, इतना बड़ा कारोबार भगवान के बिना और कौन बना सकता है?

दादाश्री : उसके पास कोई दूसरा धंधा नहीं था, इसलिए बनाया लगता है!!!

प्रश्नकर्ता : जिसने भी बनाया है, उसने सोच-समझकर बनाया लगता है।

दादाश्री : क्यों? उसके लड़के की शादी करने के लिए लड़की नहीं मिलती थी, इसलिए उसने ये ब्रह्मांड बना दिया?

प्रश्नकर्ता : तो फिर इसका क्रिएटर कौन है?

दादाश्री : क्रिएटर का अर्थ कुम्हार होता है। कुम्हार यानी प्रजापति, जो मिट्टी के बर्तन बनाता है। भगवान कुम्हार नहीं हैं, भगवान तो भगवान ही हैं। फॉरेन वाले सब लोग मानते हैं कि गॉड इज़ द क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड (भगवान ही इस दुनिया का बनाने वाला है), मुस्लिम लोग बोलते हैं कि अल्लाह ने यह दुनिया बनाई, हिन्दू लोग बोलते हैं कि भगवान ने सब बनाया है। फॉरेन के साइन्टिस्ट हमें मिलते हैं, उन्हें हम बताते हैं कि गॉड इज़ द क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड इज़ करेक्ट बाइ क्रिश्चियन्स व्यू पोइन्ट, बाइ हिन्दू व्यू पोइन्ट, बाइ मुस्लिम्स व्यू पोइन्ट, बट नॉट बाइ फैक्ट। बाइ फैक्ट, ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स। यदि आपको फैक्ट जानने का विचार हो, तो मेरे पास आना, अन्यथा आपको संतोष ही है न? क्या लगता है आपको?

प्रश्नकर्ता : सभी धर्मों का ध्येय तो एक ही है, फिर भी

ओपिनियन्स (विचारधारा) अलग-अलग क्यों हैं? और सभी 'हमारा ही सच है' ऐसे क्यों बताते हैं?

दादाश्री : इस सर्कल में यह सेन्टर (केंद्र बिंदु) है और ये 360 डिग्रियाँ हैं। कोई धर्म 60 डिग्री पर है, कोई 120 डिग्री पर है, कोई 180 डिग्री पर है। ऐसे हर एक का व्यू पोइन्ट अलग-अलग है। और 140 डिग्री वाला जो व्यू पोइन्ट है वो जो देखता है, उससे 200 डिग्री वाला भिन्न देखता है। 140 डिग्री वाला, 200 डिग्री वाले को बोलता है, कि तुम गलत हो और 200 डिग्री वाले को गलत बोलता है। हम क्या बोलते हैं कि 200 डिग्री वाला 140 डिग्री पर आ जाए और 140 डिग्री वाला 200 डिग्री पर चला जाए। फिर वह स्थान देखकर बोलो। तो दोनो बोलेंगे कि नहीं, यह सच बात है। तुम्हारी समझ में आ गया न? मगर पूरा तो 360 डिग्री वाला व्यू पोइन्ट है। तो जिसका जो व्यू पोइन्ट है, वो उस व्यू पोइन्ट से ही बोलता है, कि हमारी बात ही सच है। व्यू पोइन्ट कभी कम्प्लीट (संपूर्ण) सच नहीं होता।

एक क्रिश्चियन व्यू पोइन्ट है, एक मुस्लिम व्यू पोइन्ट है, एक हिन्दू व्यू पोइन्ट है, एक जैन व्यू पोइन्ट है, मगर ये सभी व्यू पोइन्ट हैं। सब एक ही बात बताना चाहते हैं। सेन्टर को जानने की, वो ही सब की इच्छा है। मगर वो सेन्टर की बात अपने व्यू पोइन्ट से देखते हैं और बोलते हैं। सब धर्म अलग-अलग डिग्री पर हैं, इसलिए सब लोगों में झगड़ा है। मगर खुदा के वहाँ झगड़ा नहीं है। खुदा के वहाँ तो क्या है, एक ही बात जानने के लिए सब का व्यू पोइन्ट अलग है। लोग बोलते हैं, ये दुनिया भगवान ने बनाई, गॉड इज़ द क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड! ये बात तुम्हारे व्यू पोइन्ट से सही है मगर फैक्ट (वास्तविकता) से 100% गलत है। फैक्ट हमेशा सैद्धांतिक रहता है और व्यू पोइन्ट भिन्न होते हैं। फैक्ट में मात्र साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है।

किसी का व्यू पोइन्ट तोड़ना नहीं चाहिए। जहाँ तक फैक्ट समझ

में नहीं आए, वहाँ तक उनको व्यू पोइन्ट में ही रखना चाहिए और उसके लिए ही मदद करनी चाहिए। हम ऐसा ही करते हैं। उनके व्यू पोइन्ट में ही मदद करते हैं। इससे वो आगे बढ़ सकते हैं। और जिसको फैक्ट समझना है उसको फैक्ट देते हैं। ये रियल है, बिल्कुल साइन्टिफिक है और सारे जगत् के लिए है। जो चीज़ चाहिए, वो इधर से ले जाओ। हम सेन्टर में हैं। हमें किसी के साथ मतभेद नहीं हैं।

प्रश्नकर्ता : उपनिषद् में भी कहा है कि ईश्वर कर्ता नहीं है।

दादाश्री : ईश्वर अगर कर्ता होता तो उसको भी कर्म बंधता।

प्रश्नकर्ता : मेरे हृदय में भी ये प्रश्न बहुत चलता था कि ईश्वर कर्ता कैसे? अब आपको मिलने से मुझे यह स्पष्ट हो गया।

दादाश्री : भगवान वीतराग हैं। बड़े-बड़े महात्मा लोग हमारे साथ बात करने आते हैं। उनकी 'ईश्वर कर्ता है' ऐसी बिलीफ छूटती नहीं है। तो हम उनको पूछते हैं, कि भगवान ने ये सब बनाया तो भगवान को किसने बनाया? तो फिर वो निरुत्तर हो जाते हैं। बात लॉजिकल (तार्किक) है। अगर बनाने वाला है, तो उसको भी बनाने वाला चाहिए और उसको भी बनाने वाला चाहिए, वो लॉजिक (तर्क) है।

भगवान ने कुछ नहीं बनाया, तो फिर उस पर क्यों आरोप करते हैं? भगवान तो भगवान हैं, वीतराग हैं। द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ। गॉड हैज़ नॉट पज़ल्ड दिस वर्ल्ड एट ऑल। अगर भगवान ने ये पज़ल किया होता न, तो ये सी.बी.आई. वालों को ऊपर भेजकर उसे पकड़कर जेल में डालना पड़ता। भगवान ने ऐसी दुनिया ही क्यों बनाई कि जिसमें सभी दु:खी हैं? भगवान ने ये पज़ल नहीं किया।

गॉड इज़ नॉट द क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड एट ऑल, ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (भगवान इस दुनिया का बिल्कुल ही कर्ता नहीं है, मात्र साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स)

है। भगवान को ये सब बनाने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। ये जगत् किसी ने बनाया ही नहीं है। क्योंकि जो जगत् है, उसकी अगर बिगिंनिग (शुरुआत) होती, तो उसका एन्ड (अंत) भी होता। मगर इस जगत् की शुरुआत है ही नहीं, वो अनादि से है और अनंत तक है। वो कभी क्रिएट (सर्जन) हुआ ही नहीं और कभी नाश भी नहीं होने वाला, ऐसा अनादि-अनंत है।

प्रश्नकर्ता : मगर यह जगत् विनाशी है।

दादाश्री : नहीं, वो अनादि-अनंत है। वो परमानेन्ट है। जो सनातन है उसका आदि भी नहीं होता और उसका अंत भी नहीं होता है।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य के लिए तो ये जगत् विनाशी है न?

दादाश्री : वो ठीक बात है। वो बात रिलेटिव है। ऑल दीज़ रिलेटिव्स आर टेम्परेरी एडजस्टमेन्ट, मगर जगत् तो अनादि-अनंत है।

आपको कोई परमानेन्ट चीज़ लगती है?

प्रश्नकर्ता : ऐसे देखा जाए तो सब टेम्परेरी ही है।

दादाश्री : हाँ, टेम्परेरी है, तो परमानेन्ट कोई चीज़ है?

प्रश्नकर्ता : परमानेन्ट तो कुदरत ही हो सकती है।

दादाश्री : कुदरत? कुदरत तो निरंतर बदलती ही रहती है। उसकी एक अवस्था का नाश होता है, दूसरी अवस्था उत्पन्न होती है। वो कैसे परमानेन्ट हो सकती है? तो फिर परमानेन्ट क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : वो प्रोसेस (प्रक्रिया) ही तो परमानेन्ट है न?

दादाश्री : वो तो एक अवस्था नाश होती है, दूसरी अवस्था उत्पन्न होती है। इसमें परमानेन्ट कौन सी चीज़ है?

प्रश्नकर्ता : जो नाश करने वाली है और जो उत्पन्न करने वाली चीज़ है, वो ही परमानेन्ट?

दादाश्री : नाश करने वाला कौन है?

प्रश्नकर्ता : सब कुदरत है।

दादाश्री : आपने कुदरत की डेफिनेशन (परिभाषा) सही नहीं दी।

प्रश्नकर्ता : वो ही तो नॉलेज (ज्ञान) है। कुदरत की डेफिनेशन का ज्ञान है, तो आदमी को सबकुछ पता चल जाएगा कि यह कुदरत क्या चीज़ है!

दादाश्री : खाना खाकर तुम सो जाते हो, फिर अंदर कौन चलाता है? इसमें बाइल (पित्त), पाचकरस वो सब तुम डालते हो? और चौबीस घंटे में भोजन का ब्लड (खून) बन जाता है, वो कौन बनाता है? यूरिन (पेशाब) कौन बनाता है? वो सब पृथक्करण हो जाता है, तो वो सब पृथक कौन करता है? वो क्या भगवान करने आते हैं? वो कौन करता है? वो किसी को करना पड़ता ही नहीं। ऐसे ही जगत् चल रहा है, कुदरत से ही चल रहा है।

प्रश्नकर्ता : कुदरत कौन है?

दादाश्री : कुदरत यानी साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। आप इधर कैसे आया? कितने सारे साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स मिलते हैं तब काम होता है।

2H (हाइड्रोजन) और एक O (ऑक्सीजन) साइन्टिस्ट को देते हैं, तो वो बोलता है कि हम इसका पानी बना दंगे। हम बोलेंगे, क्या आप पानी का मेकर (बनाने वाले) हैं? तो बोलेगा, 'हाँ जी, हम को 2H और एक O दे दो, तो हम पानी बना देगा।' वहाँ तक तो मेकर बोला जाता है। फिर अपने पास 2H खत्म हो गया, वन H ही है और 2O है तो उसका पानी बना दो बोले, तो वो क्या बोलेगा कि, 'इसका नहीं बन सकता।' तो तुम क्या बनाने वाले हो? 2H

और O इकट्ठा हो गया तो पानी बन जाता है। ऊपर से बरसात का पानी गिरता है न, उसमें कोई देव कुछ नहीं करते। वो खुद ही ऐसे संयोग इकट्ठा हो जाते हैं और पानी गिरता है। इसमें बनाने वाले (मेकर) की कोई ज़रूरत नहीं है। वो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है।

एक आदमी अभी ज़िंदा है। किसी ऐसी दवा का डोस (औषधि की मात्रा) उसको पिलाया तो मर जाता है, तो किसने मार दिया? भगवान ने मार दिया? किसी आदमी ने मार दिया?

प्रश्नकर्ता : पोस्टमॉर्टम (मृत्यु के बाद की डॉक्टरी जाँच) करना चाहिए।

दादाश्री : हाँ, पोस्टमॉर्टम से सच्ची बात मालूम हो जाती है कि क्या हो गया है। क्या मालूम होगा कि किसी चीज़ से, दवा से मर गया है। ऐसे सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स बन गए हैं कि जिससे वो मर गया है। इसको इतना ज़हर दे दिया कि ज़हर ही मारता है। भगवान भी मारता नहीं और ज़हर देने वाला भी नहीं मारता है। ज़हर देने वाले ने ज़हर दिया और वमन हो गया तो ज़हर निकल गया, तो नहीं मरेगा। ज़हर देने वाला यदि मारने वाला होता तो वह आदमी ज़रूर मर जाता, मगर ज़हर ही मारता है। भगवान इसमें हाथ डालता ही नहीं।

यह विज्ञान मात्र है। आपकी बॉडी कैसे बनी, वो भी विज्ञान मात्र है। ये जगत् ऐसे ही विज्ञान से चल रहा है। ये बॉडी भी ऐसे ही विज्ञान से ही उत्पन्न होती है। इसमें कोई ब्रह्मा की ज़रूरत नहीं, विष्णु की ज़रूरत नहीं, शिव की ज़रूरत नहीं है। भगवान ये बॉडी नहीं बनाते हैं, मगर भगवान की हाज़िरी होनी चाहिए। भगवान हैं तो होता है, वर्ना नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : इस साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स को ज़रा विस्तार से समझाइए।

दादाश्री : हाँ, आप हमें मिलने कैसे आएँ? तो आपको जितना दिखता है (मालूम है), उतना बोलते हैं कि मुझे इस 'भाई' ने बताया कि 'ज्ञानी पुरुष' यहाँ आने वाले हैं। उस बात से आपने विचार किया कि 'चलो, आज जाएँगे।' आप यहाँ आए, मैं बाहर जाने वाला था मगर नहीं गया। आपको दर्शन हो गए। इसके पीछे कितने कॉज़ेज़ हैं। जो दिखते हैं इतने ही कॉज़ेज़ नहीं हैं, बहुत कॉज़ेज़ हैं। इसमें से एक कॉज़ नहीं मिले, तो काम नहीं होता। आपको मालूम नहीं है कि ये किन कॉज़ेज़ से हुआ है। इन कॉज़ेज़ को साइन्टिफिक इसलिए कहा कि इसमें बहुत गुह्य कॉज़ेज़ हैं। आपको थोड़ा समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : लोग बोलते हैं कि भगवान ने हमारे लड़के को मार दिया, हमारा बहुत नुकसान कर दिया। ये सब गलत बात है। ऐसा नहीं बोलना चाहिए। भगवान तो भगवान ही है!!! कभी उसने कोई गुनाह नहीं किया।

आप अपनी औरत के साथ टेबल पर आराम से खाना खा रहे हों, फिर पाँच मिनिट के बाद कोई मतभेद हो जाता है, तो वह मतभेद किसने करवाया? आपको पूछें कि, 'तुम्हारी मर्ज़ी थी? तुम्हारी मर्ज़ी से मतभेद हुआ?' तो आप 'ना' बोलेंगे। औरत को पूछेंगे तो वो भी 'ना' बोलेगी। तो फिर ये मतभेद किसने करवाया?

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव केरेक्टर (व्यवहारिक चरित्र), मन, टेम्परामेन्ट (स्वभाव) इन सब पर आधारित है।

दादाश्री : वो तो सब विज़िबल कॉज़ेज़ (दिखाई देने वाले कारण) हैं। सच्चे कारण (रियल कॉज़ेज़) चाहिए। विज़िबल कॉज़ तो आँख से देखा जाता है, कान से सुनाई देता है, वो है।

प्रश्नकर्ता : साइन्टिस्ट के तरीके से तो हमें विज़िबल कॉज़ेज़ ही देखने पड़ते हैं न?

दादाश्री : दूसरा आपके पास कुछ चारा नहीं है। तो ये मतभेद कौन कराता है ?

प्रश्नकर्ता : कोई इस शक्ति को भगवान कहता है, कोई कुदरत कहता है, कोई अदृश्य शक्ति कहता है लेकिन कोई उसका नाम नहीं बताता।

दादाश्री : वो एक ही शक्ति है। उसी के आधार से सब चलता है। दूसरा कोई मैनेजर (प्रबंधक) नहीं है। और ये शक्ति भी कम्प्यूटर के जैसी है। उसमें चेतन नहीं है। इसमें चेतन होता तो भगवान पर ही आरोप लगता कि वो ही चलाता है। उस शक्ति से सबकुछ चलता है। आपको वास्तविकता जानने का विचार है ?

प्रश्नकर्ता : हाँ, वास्तविक ही चाहिए।

दादाश्री : बाइ फैक्ट द गॉड इज़ नॉट क्रिएटर ऑफ दिस वर्ल्ड एट ऑल। ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स।

प्रश्नकर्ता : हू जनरेटेड दीज़ एविडेन्सिस (ये संयोग कौन पैदा करता है) ?

दादाश्री : हाँ, वो एक शक्ति है, जो सब संयोग इकट्ठा (एविडेन्सिस जनरेटेड) करती है।

प्रश्नकर्ता : वो शक्ति क्या है ?

दादाश्री : हमने उसका नाम 'व्यवस्थित शक्ति' दिया है। वो 'व्यवस्थित शक्ति', इस दुनिया को व्यवस्थित (सुचारु रूप से) ही रखती है। सूर्य, चंद्र, तारे सब को व्यवस्थित रखती है। अनादिकाल से व्यवस्थित ही रखती है। सब जीवों का आना-जाना, आपका संसार भी वो शक्ति ही चलाती है, निरंतर! जीवमात्र का सब 'व्यवस्थित शक्ति' ही चलाती है। हर रोज़ वो ही शक्ति काम करती है। सारे संयोग इकट्ठा करना ही इसका काम है, उसका दूसरा कोई काम नहीं है। जैसे वो बड़ा कम्प्यूटर होता है न, वैसा ही उसका काम है।

प्रश्नकर्ता : ये कम्प्यूटर की बात समझ में नहीं आई।

दादाश्री : समझ लो, तुमने विचार किया कि मंदिर बनाने की ज़रूरत है। इधर तुमने ये विचार किया, वो विचार बड़ा कम्प्यूटर में, जो 'व्यवस्थित शक्ति' है, उसमें दर्ज़ हो जाता है। तुमने विचार किया था, वो कॉज़ है, वो कॉज़ 'व्यवस्थित शक्ति' में चला जाता है। 'व्यवस्थित शक्ति' इसकी इफेक्ट (परिणाम) के रूप में सारे संयोग इकट्ठे कर देती है। फिर आपको इसका फल मिलता है। फिर आप मंदिर बना देते हैं। आप तो अहंकार से बोलते हैं, 'ये मैंने किया', मगर वो सब 'व्यवस्थित शक्ति' ही चलाती है।

इस तरह जो परिणाम आता है, वो 'व्यवस्थित शक्ति' का काम है, ऐसा हम ज्ञान में देखकर बोलते हैं। 'व्यवस्थित शक्ति' एक्ज़ेक्ट (यथार्थ) बात है। ये हमारी लाखों जन्मों की शोध है।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित शक्ति' को भगवान कह सकते हैं?

दादाश्री : नहीं, 'व्यवस्थित शक्ति' को भगवान बोलने से क्या फायदा? इस टेपरिकॉर्ड को भगवान बोलें तो क्या फायदा? भगवान को भगवान बोलना चाहिए, और टेपरिकॉर्ड को टेपरिकॉर्ड बोलना चाहिए। जिधर भगवान नहीं है, वहाँ भगवान का आरोपण करने से क्या फायदा? मगर सारा जगत् 'व्यवस्थित शक्ति' को ही भगवान बोलता है।

'व्यवस्थित' को यदि भगवान बोलें तो उस लेटर (पत्र) को 'व्यवस्थित' स्वीकार नहीं करता, क्योंकि उस पर पता भगवान का है। और 'व्यवस्थित' खुद भगवान नहीं है, तो वहाँ से लेटर वापस आकर भगवान के पास जाता है। ऐसे अपनी अरज़ी भगवान के पास ही जाती है। इससे फायदा मिलता है। ऐसे प्रार्थना करने से परोक्ष फायदा मिलता है। मगर पूरा-पूरा फायदा तो भगवान को पहचानने से होता है। यथार्थ रूप से भगवान कौन है, ये जानना चाहिए।

परोक्ष भगवान की भजना करें तो भी फायदा मिलता है। कुछ

न कुछ तो करना ही चाहिए। उससे 'लाइट' (प्रकाश) रहती है, सद्बुद्धि रहती है, नहीं तो वो भी चली जाती है।

प्रश्नकर्ता : 'व्यवस्थित शक्ति' की अपने पर कृपा रहे, उसके लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : दुनिया में और कोई कृपा रखने वाला है ही नहीं। तुम्हारे अंदर जो भगवान है, उसी की कृपा होती है। दूसरा कोई कृपा रखने वाला है ही नहीं।

'व्यवस्थित' का एक्ज़ेक्ट स्वरूप संक्षिप्त में बता दूँ।

देखो न, ड्रामा होता है, तो उसका रिहर्सल पहले होता है, फिर ड्रामा होता है। उस समय कोई विचार करने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि रिहर्सल हो गया है। ऐसा ही होगा। वो 'व्यवस्थित' ही है। जिसका रिहर्सल आपने देखा है, उसका अभी ड्रामा हो जाएगा तो वो 'व्यवस्थित' ही है। इसमें बदलाव नहीं है। जैसा रिहर्सल किया है ऐसा ही अभी हो जाएगा। पिछले जन्म में जैसा उसका रिहर्सल होता है, फिर इस जन्म में ऐसा उसका 'व्यवस्थित' हो जाता है। फिर 'व्यवस्थित' में वो चलता है। पिछले जन्म में जो रिहर्सल होता है वो 'अवस्थित' रूप में होता है और वो अवस्थित जब फल देने को तैयार होता है, तब वो 'व्यवस्थित' होता है। तो इसमें जन्म से मृत्यु तक कुछ परिवर्तन (चेन्ज) नहीं होने वाला।

प्रश्नकर्ता : जो कुदरत के लॉ (नियम) हैं, वो ही 'व्यवस्थित' के लॉ हैं या वो ही 'व्यवस्थित' है? दोनों एक ही हैं या अलग-अलग?

दादाश्री : कुदरत का कायदा बिल्कुल नियम में है। और 'व्यवस्थित' तो जो सब जीवमात्र हैं, वे सब 'व्यवस्थित' में हैं। वो क्या हो जाएगा, क्या नहीं, सब उसका पहले से हिसाब आ गया है। कुदरत के नियम उसमें सहायता करते हैं। 'व्यवस्थित' तो पिछले जन्म से, जन्म से मृत्यु तक की यह फिल्म हो गई है। ये ग्लास (काँच)

फूट गया तो वो ग्लास तो पहले से टूट गया है, मगर अभी ये दिखता है। ऐसा ये जगत् है कि एक परमाणु भी कभी बढ़ता नहीं, कभी कम होता नहीं। अविनाशी में सब चीज़ ऐसी ही रहती है। और सबकुछ होता है वो विनाशी में होता है। अवस्थाएँ सब विनाशी हैं और विनाशी में देखने में आता है कि वो मर गया। मगर अविनाशी में कोई मरता ही नहीं है। ये मर गया, ऐसा हो गया, वैसा हो गया, वो सब रोंग बिलीफ में है, राइट बिलीफ में ऐसा होता ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं कि 'सब चीज़ों का निर्माण हो चुका है, निश्चित है', तो वह क्या है?

दादाश्री : जो निर्माण हुआ (बन चुका) है वो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (व्यवस्थित) है और नहीं निर्माण हुआ (अब तक नहीं बना) वो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स नहीं है। जो डिस्चार्ज हुआ है, वो निर्माण हुआ है, वो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। अभी आप इधर सत्संग में आए वो डिस्चार्ज है, व्यापार किया वो डिस्चार्ज (कर्मफल) है, नींद ले वह भी डिस्चार्ज है, पूरा दिन सब डिस्चार्ज ही हैं। हमारे साथ बात करते हैं वो भी डिस्चार्ज ही है। और डिस्चार्ज सब निर्माण हो गया है और (नया) चार्ज है वो (अभी तक) निर्माण नहीं हुआ है। चार्ज अपने हाथ में है।

जगत् केवल निर्माण नहीं है। चार्ज भी है और डिस्चार्ज भी है। वो डिस्चार्ज ही सब निर्माण हो गया है। जो बेटरी डिस्चार्ज होती है, वो निर्माण हो गया है। जैसे चार्ज हुई थी, वैसे ही डिस्चार्ज हो जाएगी।

अहंकार ही संसार है। अहंकार और ममता चले जाएँ तो फिर मोक्ष हो जाता है। जन्म से मृत्यु तक जो भी कुछ होता है, जो-जो अवस्थाएँ होती हैं, पढ़ने की, खेलने की, बीमारी की, नौकरी करता है, शादी करता है, ब्रह्मचर्य आश्रम, सन्यास आश्रम, वो सब डिस्चार्ज

ही हैं। अंदर नया चार्ज नहीं हो, तो आगे का जन्म बंद हो जाता है, मगर जो डिस्चार्ज है वह तो डिस्चार्ज ही रहता है। चार्ज करने वाला अहंकार और ममता चले जाएँ, तो डिस्चार्ज तो पूरा अच्छी तरह से हो जाता है और मोक्ष हो जाता है।

आचरण डिस्चार्ज है। आचरण जो होता है, आचार है वो डिस्चार्ज है और चार्ज जब बंद हो जाए तो फिर डिस्चार्ज सब खत्म हो जाएगा। तो पहले क्या करना है?

प्रश्नकर्ता : चार्ज बंद करना है।

दादाश्री : तो आपको कर्म का बंध होता है कि नहीं?

प्रश्नकर्ता : वो तो होता है।

दादाश्री : देखो न, जब तुम बोलते हो कि 'ये मैंने किया।' तब चार्ज होता है। मैं भी बोलता हूँ कि ये मैंने किया मगर मैं नाटकीय बोलता हूँ और तुम सचमुच बोलते हो।

प्रश्नकर्ता : मगर 'मैंने किया, मैं कर्ता हूँ', ऐसा मुझे कभी नहीं लगता।

दादाश्री : तो आप कौन है?

प्रश्नकर्ता : उसकी खोज में हूँ।

दादाश्री : तो फिर तुम खुद कर्ता हो। अभी तो तुमको 'मैंने किया' उसकी ज़िम्मेदारी लगती है। मगर जब तुमको सेल्फ रियलाइज़ (आत्म साक्षात्कार) हो जाएगा फिर तुम्हारी ज़िम्मेदारी नहीं। तुम मानो या ना मानो मगर साक्षात्कार नहीं किया वहाँ तक ज़िम्मेदारी तुम्हारी ही है।

केवल आत्मा ही जानना है। आत्मा का ज्ञान न हो वहाँ तक सब अटपटा लगेगा और आत्मा का ज्ञान हो गया तो अटपटा सब चला जाएगा। यह सारा बोझा ही अटपटेपन का है। सेल्फ रियलाइज़ेशन

हो गया कि सारे पज़ल सॉल्व हो जाते हैं। वेन दिस पज़ल एन्ड्स, देन नो पज़ल ऐन्ड देअर इज़ द सोल (जब यह पज़ल सॉल्व हो जाएगा, तब दूसरा कोई पज़ल नहीं रहेगा और वहीं पर आत्मा है)।

प्रश्नकर्ता : आपने पज़ल का अंत बता दिया तो इस पज़ल की आदि कहाँ से है?

दादाश्री : देअर इज़ नो बिगिनिंग ऐन्ड नो एन्ड ऑफ दिस पज़ल। वेर देअर इज़ अ बिगिनिंग, देअर इज़ अ एन्ड! (इस पज़ल की न तो शुरुआत है, न ही अंत है। जहाँ शुरुआत होती है, वहाँ अंत होता है।)

प्रश्नकर्ता : तो कौन करवाता है?

दादाश्री : वह शक्ति है। एक बड़े कम्प्यूटर की माफिक है। जिसको शास्त्र की भाषा में समष्टि बोलते हैं। किसी एक आदमी का खुद का कम्प्यूटर है, वो व्यष्टि रूप है और सभी जीवों का कम्बाइन्ड (मिला जुला) कम्प्यूटर समष्टि रूप है। इसी से सब व्यवहार चल रहा है। इसको हम साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स (व्यवस्थित शक्ति) बोलते हैं। जो हर रोज़ सूर्य, चंद्र, तारे सब को व्यवस्थित ही रखती है।

प्रश्नकर्ता : जो शक्ति चलाती है, वो कहाँ से आती है?

दादाश्री : वो कुदरती शक्ति है, भगवान की शक्ति नहीं है। ये बहुत बड़ी बात है, समझ में आए ऐसी बात नहीं है। ये एटम बॉम्ब (अणु बम) बनाया है, वो अणु में से बनाया है, तो अणु में कितनी शक्ति है?

प्रश्नकर्ता : बहुत शक्ति है।

दादाश्री : ऐसी शक्ति। बहुत शक्ति वाले ने इस भगवान को दुःख दिया है। भगवान की शक्ति इससे भी ज़्यादा है। फिर भगवान खुद की शक्ति से छूटता है।

प्रश्नकर्ता : भगवान की शक्ति के ऊपर ये कौन सी शक्ति है ?

दादाश्री : किसकी ? ऊपर कोई शक्ति नहीं। भगवान की शक्ति बहुत ज़्यादा, सब से ज़्यादा है। और जो अनात्मा (पुद्गल) है, उसकी भी शक्ति बहुत है।

प्रश्नकर्ता : ये शक्ति भगवान से भी ऊपर है ?

दादाश्री : नहीं, भगवान का कोई *ऊपरी* नहीं है। मगर वो (अनात्मा की) शक्ति बहुत राक्षसी शक्ति है, उस शक्ति से तो भगवान खुद ही बंधा हुआ है। अब भगवान छूटना चाहता है, मगर वो छूट नहीं सकता। फिर इसका रस्ता क्या बताया कि जो मुक्त हो गया है, उसकी मदद से मुक्त हो सकता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन जो मुक्त हुआ है, उसको किसने मुक्त किया ?

दादाश्री : वो समय ने किया है। उसका समय हो गया इसलिए मुक्त हो गया। सब जीवों का समय आएगा तब मुक्त हो जाएँगे। ये संसार जेल (कारागार) है। भगवान संसार रूपी जेल में रहे हैं, मुद्दत पूरी हो जाएगी तो मुक्त हो जाएँगे। मगर मुद्दत पूरी होने से पहले, उसको मुक्त पुरुष (जो सांसारिक, विनाशी बंधनों से मुक्त हुए हों) के दर्शन हो जाएँगे और वहाँ से मुक्ति हो जाएगी। इसमें मुक्त पुरुष निमित्त हैं। इस निमित्त से वो मुक्त हो जाते हैं।

तो जगत् का कर्ता, है या नहीं ?

इस दुनिया का कर्ता कोई है ही नहीं, और कर्ता के बिना दुनिया हुई नहीं !

ये जगत् किसने बनाया ?

प्रश्नकर्ता : हमें मालूम नहीं, वो ही जानने की कोशिश कर रहे हैं।

दादाश्री : हाँ, सब लोग जानने की कोशिश करते हैं, मगर कोई नहीं जानता। द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ। भगवान ने ये पज़ल नहीं किया है। भगवान तो परमानंदी और परम ज्योति स्वरूप है।

प्रश्नकर्ता : तो खुद ने ही पज़ल किया है?

दादाश्री : नहीं, खुद क्या पज़ल करने वाला है? इस दुनिया का कोई क्रिएटर नहीं है। इस दुनिया का कर्ता कोई नहीं है। भगवान भी कर्ता नहीं है और आप भी कर्ता नहीं है और बिना कर्ता ये दुनिया बनी भी नहीं। हम विरोधाभासी बात बोलते हैं न? मगर ये समझने जैसी बात है। 'कर्ता नहीं है' यानी कोई स्वतंत्र कर्ता नहीं है। और 'कर्ता है' वो नैमित्तिक कर्ता है।

खुद कर्ता होता तो मोक्ष में नहीं जाता, छूटता ही नहीं। नैमित्तिक कर्ता है, इसलिए छूट जाता है। स्वतंत्र कर्ता होता तो वो दुनिया का मालिक हो जाता था कि 'हमने ये दुनिया बनाई है, तो हम मालिक हैं।' मगर किसी को संडास जाने की खुद की ताकत नहीं है, तो मालिक कहाँ से हो गया?! कोई मालिक नहीं है। नैमित्तिक कर्ता किसे कहते हैं कि इस डॉक्टर का धक्का आपको लग गया और आपका धक्का ये भाई को लग गया और ये भाई गिर पड़ा। उसका पाँव टूट गया, तो ये भाई तुमको बोलेगा, 'तुमने हमारा पाँव तोड़ दिया।' मगर आप जानते हैं, तुमको इस डॉक्टर का धक्का लगा था। इसमें आपकी कोई मर्ज़ी नहीं है, ज़िम्मेदारी नहीं है। ऐसे ही ये नैमित्तिक कर्ता है। कर्ता तो है मगर नैमित्तिक कर्ता है। द वर्ल्ड इज़ द पज़ल इटसेल्फ, गॉड हैज़ नॉट पज़ल्ड दिस वर्ल्ड एट ऑल। ओन्ली साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्सिस है।

आपने समुद्र का किनारा देखा है? समुद्र के किनारे से थोड़ी दूर आपका बंगला हो, बंगले के कम्पाउन्ड (आँगन) में आपने लोहे की दो सलाखें रखी। बारह महीनों के बाद आप गए, तो लोहे को कुछ हो जाएगा? उसको रस्टी (ज़ंग वाला) किसने किया? समुद्र

ने किया? खारी हवा ने किया? लोहे की इच्छा है? खारी हवा बोलेगी कि हमारी इच्छा नहीं है, मैंने तो ऐसा कुछ किया नहीं है। समुद्र को पूछेंगे तो, वो तो अपने खुद के क्षेत्र में रमण कर रहा है। लोहे की भूल है क्या? लोहे को दूसरी जगह पर रखो तो कुछ नहीं होता था। तो क्या बात है? मात्र साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। इसमें भगवान कुछ करता ही नहीं। भगवान क्या करता है? भगवान तो, आपको प्रकाश देता है। वो चोर को भी प्रकाश देता है और पुलिस को भी प्रकाश देता है। भगवान क्या बोलता है, 'तुम जो करते हो वो तुम्हारी ज़िम्मेदारी पर करते हो, हम तो प्रकाश देते हैं।'

प्रश्नकर्ता : ये साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है, वह कैसे हुए? उसे किसने तैयार किया?

दादाश्री : कोई तैयार करने वाला नहीं है। वो अपने आप हो जाता है। वो कम्प्यूटर के जैसे चलता है। पूर्व जन्म का कर्म है, वो फीड हुआ है और अब जो फल मिला वो कम्प्यूटर जैसी शक्ति है वो फल देती है, जिसे 'व्यवस्थित' शक्ति कहते हैं। जिसे शास्त्रकारों ने 'समष्टि' कहा है। अंग्रेजी में उसे साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स बोलते हैं।

जय सच्चिदानंद

संपर्क सूत्र

दादा भगवान परिवार

अडालज : **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421
फोन : 9328661166, 9328661177
E-mail : info@dadabhagwan.org

मुंबई : **त्रिमंदिर,** ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)
फोन : 9323528901

दिल्ली	9810098564	**बेंगलूर**	9590979099
कोलकता	9830080820	**हैदराबाद**	9885058771
चेन्नई	7200740000	**पूणे**	7218473468
जयपुर	8890357990	**जलंधर**	9814063043
भोपाल	6354602399	**चंडीगढ़**	9780732237
इन्दौर	6354602400	**कानपुर**	9452525981
रायपुर	9329644433	**सांगली**	9423870798
पटना	7352723132	**भुवनेश्वर**	8763073111
अमरावती	9422915064	**वाराणसी**	9795228541

U.S.A. : **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330-111-DADA (3232)

Kenya : +254 722 722 063

UAE : +971 557316937

Dubai : +971 501364530

Australia : +61 421127947

New Zealand : +64 21 0376434

Singapore : +65 81129229

www.dadabhagwan.org

जगत कर्ता कौन ?

ये दुनिया का कोई क्रियेटर नहीं है। ये दुनिया का कोई कर्ता नहीं। भगवान भी नहीं और आप भी नहीं, और बिना कर्ता के ये दुनिया हुई भी नहीं। हम विरोधाभास बोलते है न? मगर ये समझने जैसी बात है। कर्ता नहीं है याने कोई स्वतंत्र कर्ता नहीं है ओर कर्ता है वो नैमित्तक कर्ता है।

- दादाश्री

Printed in India

Price ₹ 20